P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मुगलकालीन महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता का एक अध्ययन

नाजिया हुसैन
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल
यूनिवर्सिटी,
जयपुर

सारांश

मुगल काल में सल्तनत काल की अपेक्षा स्त्रियों की अवस्था अपेक्षाकृत कुछ अधिक स्वतन्त्र थी। प्रथम मुगल शासक बाबर ने तैमूर और चंगेज खाँ की परम्पराओं का ही अनुसरण किया और अपने समकालीन मुख्य स्त्रियों को राजनीति में सक्रिय रूप में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। परन्तु बाबर ने सम्पूर्ण सम्प्रभुता का अधिकार महिलाओं को नहीं दिया। जिस समय बाबर के पिता उमर शेख़ मिर्जा की मृत्यु हुई (1494 ई0) बाबर की उम्र 11 वर्ष की थी। अपनी दादी एहसान दौलत बेगम के निर्देश से बाबर ने प्रशासन का कार्य चलाया और अपनी स्थिति सुदृढ. की। बाबर की माँ कुतलुक निगार खानम सदैव युद्धों में बाबर के साथ रहीं। बाबर की पत्नी महीम बेगम ने अपने पति की कठिनाइयों में सर्वदा बाबर का साथ दिया। अपनी योग्यता के कारण राज्य में उसका अधिक सम्मान प्राप्त था और बाबर के बगल में दिल्ली के तख्त के समीप बैठती थी। बाबर की मृत्यु के 2½ वर्ष बाद तक वह राजनीति में भाग लेती रही थी। बाबर की दूसरी पत्नी बीबी मुबारिका यूसुफजई कबीले की थीं। यूसुफजई कबीले के लोगों और बाबर के बीच उसने समझौता कराने में योगदान दिया जिसके कारण बाबर का अधिकार अफगानिस्तान पर बना रह सके। यह अत्यधिक योग्य और कुशल प्रशासक भी थी।

मुख्य शब्द : मुगल काल, महिला शासन।

प्रस्तावना

हुमायुँ के शासनकाल में खानजादा बेगम ने जो बाबर की बड़ी बहिन थी, ने मुगल दरबार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। महीम बेगम की मृत्यु के बाद उसे 'बादशाह बेगम' को उपाधि से विभूषित किया गया।[1] उसने हुमायुँ और उसके भाइयों के बीच समझौता कराने का प्रयास किया परन्तु वह असफल रही। हुमायु के चचेरे भाई सुल्तान मिर्जा की पत्नी हराम बेगम प्रशासकीय योग्यता के लिए प्रसिद्ध थी।[2] उसे 'बली नियमत' की उपाधि मिली थी। 1549 ई0 में जब हुमायुँ काबुल से बल्ख पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। तब उसने हराम बेगम से सहायता माँगी जो उसे तुरन्त दी गई। 1566 ई0 में हराम बेगम ने काबुल की राजनीति में बढ़ी रूचि दिखलाई परन्तु वह काबुल पर अधिकार न कर सकी।[3] उसने बदखशाँ के प्रशासन को सम्भाला वह महत्वाकांक्षी महिला थी। अभिजात वर्ग के लोग और राजकीय परिवार के सदस्य उससे भयभीत रहते थे और उसका आदर करते थे। इससे ज्ञात होता है कि यह महिला कितनी राजनीतिक ताकतवर थी।[4]

अकबर के समय में उसकी सौतेली माँ महाचूचक बेगम का नाम उल्लेखनीय है। यह एक अत्यधिक महत्वाकाँक्षी महिला थी।[5] उसका बेटा मिर्जा मोहम्मद हकीम काबुल का गवर्नर नियुक्त किया गया (1556 ई0) महाचूचक बेगम ने काबुल के प्रशासन को प्रभावित किया। अकबर की प्रमुख दाई माहम अनगा भी एक प्रभावशाली महिला थी।[6] उसके ही कारण बैरम खाँ का जो अकबर का संरक्षक था, पतन हुआ (1560) ई0। वह अकबर को प्रभावित करने में सफल हो सकी। दो वर्षों तक अकबर महल की स्त्रियों के प्रभाव में रहा, जिसका नेत ृत्व माहम अंगा कर रही थी। 1562 ई0 में अकबर ने इन स्त्रियों के प्रभाव से अपने को मुक्त कर लिया। जबकि माहम अंगा के पुत्र आधम खानँ को वजीर की हत्या के अपराध पर मृत्यु दण्ड दिया गया। कुछ समय बाद पुत्रशोक में माहम अंगा की मृत्यु हो गई।[7]

अध्ययन का उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य इस शोध पत्र के निम्न हैं :–

1. अकबर की एक चचेरी बहन बरन्नुन्निसा बेगम थी8 जिसका विवाह बदखशां के ख्वाजा हसन से हुआ था। काबुल के गवर्नर मिर्जा मुहम्मद हाकिम के विद्रोह करने के बाद अकबर ने इसे काबुल का गवर्नर नियुक्त किया (1581 ई0) । अकबर के शासनकाल में उसकी माँ मरियम मकानी और उसकी पत्नी सलीमा बेगम राजनीति में अधिक रूचि लेती थी।[9] 1599 ई0 में सलीम के विद्रोह करने पर मरियम मकानी ने अपना प्रभाव पिता पुत्र पर डालकर समझौता कराया। 1601 ई0 में दूसरी बार सलीम ने विद्रोह किया तब सलीमा बेगम ने सलीम को अकबर से क्षमादान दिलाया और पिता पुत्र में समझोता करा दिया इस समझोते के ही कारण मुगल वंश का बटवारा होने से बच पाया।
2. जहाँगीर के गद्दी पर बैठने के एक वर्ष के बाद उसके पुत्र खुसरो ने मिर्जा अजीज कोका के उकसाने पर विद्रोह कर दिया। जहाँगीर ने विशिष्ट अमीरों से मत्रणा की और निर्णय लिया कि मिर्जा को तुरन्त मृत्यु दण्ड दिया जाए, जिसका विरोध खानेजहाँ लोदी ने किया। ठीक इसी समय सलीमा बेगम ने जहाँगीर को पर्दे के अन्दर से यह कहकर बुलवाया कि सम्राट तुरन्त जानानाखाना में आ जाऐं, नही तो स्त्रियाँ स्वयं उनके पास आऐंगी।[10]
3. जहाँगीर को विवश होकर जानानाखाना में आना पड़ा और स्त्रियों के कहने पर मिर्जा अजीज कोका को क्षमा करना पड़ा। स्त्रियों के समझाने पर जहाँगीर ने खुसरों को अपने पास आने दिया। इस तरह सम्राट जहाँगीर को महिलाओं द्वारा सही समय पर सही परामर्श देकर मुगल वंश को होने वाली क्षति से बचा लिया।
4. जहाँगीर के शासनकाल में नूरजहाँ सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में अत्यन्त प्रभावशाली रही। उसने प्रशासन का कार्य चलाने के लिए अपना एक दल बनाया। उसने न केवल प्रशासन कार्य में बल्कि सैनिक क्षेत्र में भी अदभुत कुशलता प्रदर्शित की जब उसने अपने पति जहाँगीर को महावत खाँ के चंगुल से छुड़वाया।
5. नूरजहाँ ने सामाजिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। उसने निर्धन मुसलमानों को सरकार की और से अनुदान दिया। जिससे वे अपनी पुत्रियों का विवाह कर सकें। उसने नए–नए डिजाइनों के वस्त्रों का उपयोग किया और नए फैशन चलाए।

जहाँगीर की मृत्यु के बाद शाहजहाँ के गद्दी पर बैठने के बाद उसने राजनीति से सन्यास ले लिया। नूरजहाँ को राजनीति की विस्तार से उल्लेख इस शोध में यथा स्थान किया गया है।[11]

संकल्पना

शाहजहाँ के शासनकाल में मुमताज महल ने राजनीति में अपना अभाव बनाए रखा। उसने गुजरात के गर्वनर सैफ खाँ को शाहजहाँ की ओर से मना लिया। मनुची के अनुसार मुमताजमहल ने पुर्तगालियों के विरूद्ध सैनिक अभियान के लिए शाहजहाँ को प्रेरित किया। 1631 ई0 में मुमताजमहल की मृत्यु के बाद शाहजहाँ की पुत्री जहाँनारा ने राजनीति में रूचि दिखलाई और अपना प्रभाव स्थापित किया। जिस किसी को पदोन्नति के लिए सम्राट से प्रार्थना करनी होती थी वह जहाँनारा के द्वारा अपना कार्य करवाता था। जहाँनारा ने मुगल परिवार के दुःखी सदस्यों को सांत्वना दी। उसके ही प्रभाव के कारण शाहजहाँ ने औरंजेब को कई बार क्षमा किया और उसको अपने पद पर बने रहने दिया। 1656 ई0 में गोलकुण्डा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शाह ने जहाँनारा को पत्र लिखा कि वह सम्राट पर अपना प्रभाव डाले और औरंगजेब के उसके राज्य पर आक्रमण करने को रोकने में सहायता करें।[13] उत्तराधिकार के सम्बन्ध में विजयी होने के बाद औरंगजेब ने अपने भाइयों को मरवा डाला और शाहजहाँ को कैद कर लिया। ऐसे समय में जहाँनारा निरन्तर शाहजहाँ की सेवा करती रही। जहाँनारा अपने मृत भाइयों के बच्चों की देखभाल करती रही। औरंगजेब ने भी सदैव जहाँनारा का सम्मान किया और इसे राज्य द्वारा मिलने वाला अनुदान जारी बनाये रखा।[14]

रोशन आरा बेगम शाहजहाँ की दूसरी पुत्री थी। उसने सदैव औरंगजेब का साथ दिया। वह अपने बड़े भाई दारा की विरोधी थी और उसने दारा को मृत्यु दण्ड देने के लिए औरंगजेब पर दबाव डाला। औरंगजेब ने उसे 1669 ई0 में शाह बेगम की उपाधि दी और 5 लाख रूपया दिया। औरंगजेब की दो पत्नियों, दिलरस बानु बेगम और उदयपुरी महल ने उस पर अपने प्रभाव डाले। 1662 ई0 में जब औरंगजेब बीमार पड़ा, रोशनारा बेगम ने शाही मोहर अपने अधिकार में रखी और सम्राट की बीमारी को छिपाए रखा। इस तरह इसने अत्यन्त सफल राजनीति का परिचय दिया।[15] औरंगजेब की पुत्रियों ने भी राजनीति में रूचि दिखलाई। जेबुन्निसा बेगम ने शाहनवाज खाँ को अपने पिता के हाथों दण्डित होने से बचा लिया। जेबुन्निसा ने अपने छोटे भाई मुहम्मद अकबर का साथ दिया जिससे अकबर के विद्रोह करने पर और भगवाने पर उसे बन्दी बनाया गया। उसका वजीफा बन्द कर दिया गया (1702 ई0)। औरंगजेब ने अपनी दूसरी पुत्री जीनतुन्निसा बेगम को मराठा कैदियों, शम्भाजी की विधवा और शाहू की देखभाल का कार्य सौंपा।

काबुल के गवर्नर अमीर खाँ की पत्नी साहिबजी प्रशासकीय मामलों में दक्ष थी। वह राजनीति में भाग लेती थी। काबुल प्रा न्त का वास्तिविक गवर्नर उसे ही समझा जाता था। जहाँदरशाह के शासनकाल में लाल कुँवर प्रशसकीय मामलों में हस्तक्षेप करती थी। उसके ही कहने पर लोगों को जागीरें दी जाती थीं। उसके सगे संबंधियों को उसकी सिफारिश पर जागीरें दी गईं। उसे शाही चिह्न प्रदान किए गए। 1712–13 ई0 में फारुखसियार की माँ ने राजनीति में भाग लिया और सैयद भाइयों के समर्थन से फारुखसियार मुगल सम्राट बनाया गया। बाद में अपनी माँ की सिफारिश पर मुहम्मद मुराद कश्मीरी को विकालत खाँ की उपाधि और 1000 का मनसब दिया।[16]

मुहम्मदशाह के समय में उसकी माँ नवाज कुरेसिया बेगम ने राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उसके प्रयासों के कारण सैयद भाइयों का पतन हुआ। उसके शासनकाल में कोकी ज्यू ने राजनीति में सक्रिया भाग लिया। उसने सम्राट की माँ नबाव कुरेसिया को अपने ज्योतिष के ज्ञान

से प्रभावित किया। मुहम्मदशाह के सम्राट बनने के बाद कोकी ज्यू को शाही मोहर रखने के लिए दिया। बहुत से अमीरों ने ऊँची जागीरों के लिए उसके माध्यम से सम्राट से सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें सफलता मिली। इस प्रकार कोकी ज्यू ने 'पेशकश' के रूप में बहुत सा धन संग्रहित किया।[17]

सम्पूर्ण मुगल काल में राजकीय परिवार की स्त्रियों को विविध उपाधियों से भी सम्मानित किया था, जैसे 'मरियम मकानी', 'मरियमुरा जनानी', 'विलकिस मकानी', सबसे महत्त्वपूर्ण उपाधि 'नूर महल' और 'नूरजहाँ' ने मेहरून्निसा को दी। उसे 'शाह बेगम' भी कहा जाता था। शाहजहाँ ने अपनी पत्नी अर्जुमन्दबानू बेगम को 'मुमताज महल' की उपाधि दी और उसकी स्मृति में ताजमहल बनवाया।[18] जहाँनारा को 'साहिबातु जजमानी' पादशाह बेगम की उपाधियाँ दी गईं। औरंगजेब की पुत्री जीनतुन्निसा बेगम को 'बादशाह बेगम' की उपाधि मिली। औरंगजेब ने अपनी पत्नियों को उन स्थानों के नाम की उपाधियाँ दी जहाँ से वे आईं थीं, जैसे – 'औरंगाबादी महल', 'उदयपुरी महल'। जहाँदार शाह की प्रिय बेगम लाल कुँअर को 'इमतियाज महल' की उपाधि मिली। इसी प्रकार मुहम्मद शाह की माँ को 'हसरत बेगम' और 'मलिकाये जमानी' की उपाधियाँ दी गईं इन स्त्रियों को व्यक्तिगत जागीरें और नकद धन लाल कुँअर को जहाँगीर शाह ने दिया।[19]

निष्कर्ष

ऐसा भी समझा जाता है कि मुग ल राज परिवार की कुछ महिलाओं ने राजनीति के साथ–साथ ही निजी व्यापार में भी रूचि दिखलाई और माल भेजने के लिए अपने अलग जहाजों की व्यवस्था कीं जहाँगीर की माँ का जहाज 1200 टन माल ले जाने की क्षमता रखता था। इसी प्रकार नूरजहाँ के पास कई जहाज थे। वह विदेश ी व्यापार में दिलचस्पी रखती थी। नूरजहाँ का मुख्य प्रतिनिधि उसका भाई आसफ खाँ था। जहाँनारा भी राजनैतिक कार्य के साथ–साथ अपना निजी व्यापार करती थी। और उसके भी कई जहाज थे। उसने अंग्रेज और हालैण्ड के व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित किया और व्यापार में अधिक लाभ प्राप्त किया।[20] इसीलिए मुगल सम्रा टों ने अपने हरम के जनानखाने को सुव्यवस्थित किया। स्त्रियों की सुरक्षा के लिए अंगरक्षक (अहदीज) महल के चारों तरफ रखे जाते थे। महल में नाजिर होता था। जिसकी देखरेख में यह अंगरक्षक कार्य करते थे। इसके अतिरिक्त मुगल सम्राट महल के अन्दर स्त्रियों की नियुक्ति करता था। जिनका कार्य हरम के विषय में प्रतिदिन विस्तृत जानकारी सम्राट को देना था। हरम में स्त्रियों को पर्दे में रखा जाता था। कोई बाहरी व्यक्ति अन्दर नही जा सकता था। इससे स्पष्ट होता है कि मुगल महिलाओं को इतनी राजनैतिक स्वतंत्रता होने के बाद भी महिलाओं पर कठोर सामाजिक व धार्मिक नियम थोपने की परम्परा भी मुगल वंश में जारी रही। इससे स्पष्ट होता है कि मुगल काल में भी महिलाओं को राजनैतिक पूरी आजादी नहीं थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Akbarnama III by Abdul Fajal: "A wife who unfortunately to give birth toGirls in succession was despised and even sometimes divorced."pp58-260*
2. *Budaoni II: "If a young woman was found running about the streets and bazars of the tow and while so doing did not veil herself or allowed herself to become unveiled."pp 391-92*
3. *Ovirgton: "All the women of fashion in India are closely preserved by their husbands who forbid them very right of strangers."pp 40-41*
4. *Della Valle: "For these (Muslim Ladies) unless they by dishonest or Poor never come abroad."pp 58-59*
5. *Hanitton: "The Muhammadan women always go veiled when the appear abroad." Pp56-57*
6. *Storia: "When a princess desired to ride an elephant." The animal. pp31-33*
7. *Bernier "It is indeed a proverbial observation in these armies that three things are to be carefully avoided." pp374*
8. *Jahangir : Turk-J-Jahangiri "It is maximum of Hindus that no good deed can be performed by men in social state without the partnership or presence of the wife whom they have styled the half of men."pp430*
9. *A Pastamba "Women as mother are the best and foremost preceptors of children."pp 28-32*
10. *"I want to meet my mother at Dhar (near Lahore) and performed Kornish, Sijdah and Taslim with all obedience and then took leave of her."*
11. *"There are several recorded instances when ladies acted as mediators and successfully settled disputes. Khan Mirza was let off on the recommendation of Khanum." pp311*
12. *"Abul Fazal Glimpses of Medicine Vol. India Culture ornaments used by the women of India." Pp132*
13. *Quoted by Yusuf Husain in Glimpses of Medieval Indian Culture. pp209*
14. *Dr. A.L. Srivastava: Medieval Indian Culture "Contrary to the Smriti rule of the perpetual dependence of women princesses."pp192*
15. *J. Sarkar : "Her administrative genius and strength of character Saved the nation in that awful crisis. pp207*
16. *गर्नियर : टेंवल्स, पृ0 255–56*
17. *बी0एल0 लूनिया : भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पृ0 372*
18. *Jahangir's India, tr. Moreland Gey, डॉ0 यूसुफ हुसैन द्वारा उद्धृत। पृ0 104*
19. *ए. आई. श्रीवास्तव : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति। पृ0 181*
20. *एल0पी0 शर्मा : मध्यकालीन भारतीय इतिहास। पृ0 451*